

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,  
JAMMU

No. ४४२  
घ

Title पिङ्गलम्

Author पिङ्गलः

Extent २ पत्र Age

Subject ध्वन्याः शास्त्र



ने ५४२ अ  
लिङ्ग लम्  
२ प. माली  
एक: ३०० अ  
करी. नि. अ. व.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ जोविविहमत्तसाअरपारंपत्तोविविमलमइहेलं। पठ  
मंभासतरेंडोणा ॐ सोपिंगलौजअइ ॥ १ ॥ दीहो। संजुत्तपरोविन्दुजुओ  
पाडिओअचरणंते ॥ सगुरुवंकदुमत्तोअगोलदुहोइसुद्धएकअलो ॥ २ ॥  
जहामाईरुएहेओदिगो जिगोअबुदु ॐ देवो ॥ संभं कामंतीसागोरीगदि  
लत्तणंकुणइ ॥ ३ ॥ कस्यविसंजुत्तपरो। वगोलदुहोइदंसनैणजहा ॥ परिल्ल  
सईचित्तधिज्जं। तरुणिकउक्खम्मिणिबुत्तम् ॥ ४ ॥ इहिआईविंदुजुआ। ए  
ॐ सुद्धअवरामिलिआविलदु। रहवंजणसंजोरायरोअसंसमिहीहोइ

राम •

१



सविहसं॥५॥ जहा। माणि। माणि। माणि। माणि। फल एओ। जे चरण पडु। कंत॥ स  
 रुजे। भुअंगम जइणम इ किं करिए॥ मणि मंत॥ ६॥ रहवं जन संजो अस्स ज  
 हा। वेउ सहज तुहा। चंचला सुंदरि रुदहिं वलंत॥ पअउण च॥ ह्वसि। खुल्लणा की  
 लसि। उण उल्ह संते॥ ७॥ जइही होवि अवगोल दुजी हा पठइ होइ सो विल दु॥  
 वगो वितुरि अपठिओ। दत्तिणि विरक जाणे दु॥ ८॥ जहा॥ अरेरे वाहदिक  
 हूणा बछोटि उगम गक गति रादेहि॥ तइएहिण इ संतार देइ जो चाहसि सो लेहि  
 ॥ ९॥ जेमण सहइ कण अतुला तिल तुलि अं अद्व अद्वेण॥ तेमण सहइ सवण



तुला अवच्छेदं छंदभंगेण ॥ १० ॥ अबुद्बुद्गणं मभ्रैकवञ्जोपठ इलकवणवि  
 द्गणं ॥ भुअअगालगारवगाहिंसीसखुलिअणजारोई ॥ ११ ॥ दडुडडाणं ॥ म  
 ज्ञेगणभेआहोतिपंचअक्खरओ ॥ छपचतदाजहसंखेछप्यंचचउत्तिदुकला  
 सु ॥ १२ ॥ दगणोंतरहभेओअट्टाईहोतिठगणस्सडगणस्सपंचभेआतिअठग  
 णेवेविणगणस्स ॥ १३ ॥ अथमाआप्रस्तारपठमगुरुहेट्टाणेनदुआपरिट्टुबदु  
 अप्यबुद्धीए सरिसासरिसापत्तीउवरिआगुरुलहदेदु ॥ १४ ॥ हरससिस्सेरोसक्को  
 सेसोअदिकमलबंभकलिचंदो ॥ धुअधम्मोसालिअरोतेरदणामंछमत्ताणं

राम व



॥ १५ इदासण अरुसरोचा ओहीरो असेदरो कुसुमे ॥ अदिगण पाइकगणो पंचक  
 लेपिंगलेकहि ओ ॥ १६ ॥ गुरुजु अकस्मै गुरु अंतर अलोप ॐ हरमि गुरु मभू ॥  
 आइ गुरु घसु चरणो विप्यो सर्वे हिं लहु एहिं ॥ १७ ॥ धु अचिन्ह चिरं चिराल अतो  
 मरं तुंबुरुपत्त च अमालार सवासपवण वल अं लहु आरंभेण जाणे दु ॥ १८ ॥ सु  
 रव इपट्ट द्यताला करताला णंद छंदे णं ॥ णिवाणं ससमु दंत रं एहप्यमाणेण ॥ १९ ॥  
 भावरसतांडव अंणारी अहकुल भामिणि अतिलहु गणस्सक इवरो इ अणा मं पिं  
 गलोकह ॥ २० ॥ रोउरसणा भरणं चामरफणि मुद्दकण अ ॥ कुंडल अंबं कं माण



सुवलअहारावलिगोहगुरुअस्स॥ २१॥ णिअपिअपरमउसुपिगहिलदुत्तिस  
 मासकइदिठुं॥ अरुचउत्तमरुणामंफणिराॐ यइगणंभणइ॥ २२॥ सुरअलअ  
 गुरुजुअलंकससमाणेणरसिअरसलगं॥ मणहरणसुमइलंविअलहलहि  
 ॐ तासुवसेण॥ २३॥ करपाणिकमलहस्यंवाहोमुअदंडपद॥ रणअसणिअंग  
 अमरणरअणणामाभुअमरणंहोतिसुपसिद्धं॥ २४॥ भुअवइअसणरगअव  
 इवसुहाहिवरज्जगोवालो॥ उस्सअकचक्कवइयअहरथणअणरिहाइं॥ २५॥  
 पअआपाअचरणजुअलंअवरुपआसेइगंडवलहदंताअपिआमहदहणंणेॐ

राम०

३



ररइजंघ जगलेण ॥ २६ ॥ पठमं एरिसिविप्योवी रासरपंच जाइसिहरेहिं ॥ २७ ॥  
 अवरपरमोपाओहांति च उक्केणलदुरण ॥ २७ ॥ सुणरिंद अहिअकं जरगअ  
 वरदंताइंति ॥ अहमेहोरागवइतागवइगअणं भं पंतलपेण ॥ २८ ॥ यकिववि  
 राडमअंदरुवीणा अहिजकवअमिअजोहलअं ॥ रूपसंयसगासनगरुअ  
 विआणेकुमभुलदुरहिं ॥ २९ ॥ बरुविविहपहरणे हिं पंचकलओगणो होइ  
 ॥ गअरइतुरआपाइक्करहणामेण जाण च उमत्ता ॥ ३० ॥ तालंकहारणे उरकैउ  
 रओहांति गुरुमेआरसमेरुदंडकाहललदुमेआहांतियताई ॥ ३१ ॥ संखंफु



पिंगल.

४

स्वकाहलंरवंअसेसेहिकणअलअरुअणाणाकुसुमंरसगंधसदृथअरमाणं  
॥ ३२ ॥ मोतिगुरुणोतिलकुलरुगुरुआइयभौजमभ्रगुरुमभ्रलरुगोसोउण  
अंतगुरुतोविअंतलदुरण॥ ३३ ॥ पदवीजलसिहिआलोगअणंसरोअचंदमा  
णाआंगणअठुइठुदेवोजहसंखंपिंगलेकहिओ॥ ३४ ॥ मगणणगणदइमित्त  
होइभगणयगणहोइभिच्च॥ ३५ ॥ आसीणजतदुअउगणअवसिठुउअरिणिच्च॥  
॥ ३५ ॥ मगणाअद्विथिरकज्जयगणसुहसंपआदिज्जइरगणमरण।संपल  
इ।सगण।सहदेसुवांसइ।तगणसुसफल।कहइजगण।खरकिरणविसज्जइभग

राम०  
४



णरअरमंगलअरोगकरपिंगलभासइ जतकवागाहादोहइसुणदुनगणहो  
 इपठमकरवरइ। तसुअद्विबुद्धिसवंपुरइरणराउलदुत्तरतरई॥३६॥ मित्तमित्तदे  
 अद्विबुद्धिअरुमंगलदिज्जइमित्रभि थिरकंधजुम्मनिम्मअजअकिज्जइ  
 मित्तउआसेकज्जबंधणदु पुणकिज्जइमित्तहोइजइसत्तुगोत्तबंधवपीडिज्ज  
 इअरुभिच्चमित्तसमकज्जहोइभिच्चभिच्चआअत्तिचलभिच्चउआसेधणण  
 सदभिच्चवैरिहाकंदपलं॥३७॥ उआसीणजइमित्तकज्जकिछुमंददेखावइ॥ उ  
 आसीनजइभिच्च। सबआअत्तिचलावइ॥ उआसीणउआसेमंदमलकिछुइ



पिंगल०

५

५

पाहिदेकिवअ॥ उआसीणजइसत्तुगोत्तवरिउकइलेकिवअजइसत्तुमित्तहोइ  
मुसफलसत्तुभिच्चहोइघरणिणस॥ यणसत्तुउआसेधणुणसइसत्तुसत्तुणा  
अक्खवस॥ ३८॥ अथमत्ताणउद्दिठुं पुवजुअलसरिअंकदिज्जसु गुरुसिरअं  
कन्हसेसमिटिज्जसु उवरअंकलेकिवकइआणहुतेहिपरधुअउद्दिठुजाण  
हु॥ ३९॥ अथमात्राणांनष्टं नठुसवकलाकारिज्जसु पुवजुअलसरिअंका  
दिज्जसुपुच्छलअंकमेदावहुसेसाउवरअंकलोपिकइलेखा॥ ४०॥ जत्थज  
स्यपाविज्जइभाग सहुकहइफुरपिंगलनागपरमत्तालेइगुरुताजाइ जत्तले

राम०

५



कखसिततलेकखदिआइ॥४१॥ अथवर्णोदिष्टं अकवरउप्यरदसम्। अंकादिज्ज  
 सुमुण्डु उदिठ्ठालदु उप्यरजो अंकोत्तंदिइएकेणजाणेदु॥४२॥ अथवर्णन  
 षं॥ गाढे। अंके। भाअकरिज्जसुसमभाअहंतहलदुस्रणिज्जसु॥ विसमएक्कदे  
 इवंतनकिज्जसुपिंगलजंयंइगुरुआणिज्जसु॥४३॥ अथवर्णमेरुः॥ अकवर  
 संखेकोठुकरुआइअंतपठमंक॥ सिरदुइअंकेअवरमरुसईमेरुणिसंव॥४४॥  
 अथवर्णपताका॥ उदिठ्ठालसरिअंकादिज्जसुपुवअंकपरमरणकरिज्जसु पाउलअं  
 कपठमपरितेज्जसुपत्थरसंखपताकाकिज्जसु॥४५॥ अथमात्रामेरुः उइदुइको



पिंगल०

६

कोट्टासरिलिहृदपठमअंकतसुअंत- तसुआइहिपणएकसउविसमेवेविमिलं  
त४६॥ सिरअंकेतसुरिपरअंकेउवरकोट्टपररुणीसंके भत्तामेरुअंकसंचारि  
बुज्झुदुबुज्झुहजनदुइचारि॥४७॥ उद्विहृसरिअंकाथप्यदुधामावत्तेपरंले  
इलुप्यदु एकलोपेएकगुरुआणरुदुइतिणिलोपेदुइतिणिजाणदु॥ मत्तपता  
कापिंगलेगावजोपावइसोपरहिबु वा॥४८॥ अथमात्रामर्कदी॥ कुअछअको  
ठेपंतिकरिज्जसु। छदुपंतीतदुअंकादिज्जसु। दुइसउअंकापठमापंती। दोसरीपु  
बजुअलणिभंतीपठमंपंतिअंकहिगुणिवीए। अंकादिज्जसुपंतीतीए- वेपिपंच

राम०

६



धरिदुस्म अंका। को दु जु अलपरदणिस्संका॥ एकगालचउको द्वा अगे पंच  
 छाडिथप्य दुता अगो एकपठमसिरपवह अगे छदुमपंती परहरंगे॥ पंचम  
 छदुमपंती अंके चारिमपंति परहरंगि शंके वित्तपमे अमत्त अरुवसह अंतपं  
 तिदइलदुगुरु सुसहा पंडि अभइए जोको इवु ज्झइ मक्कडि आणहिदस्थि अरु  
 ज्झइ॥ ४२॥ अथवणमैर्वादी जाल॥ अकरसरसंखैको द्वाकि ज्जसु छंदुपंतीत  
 ह अंकादि ज्जसु एकदि आइहि पठमापंति दइसउदुस्म वेविणिमंती॥ आइवे  
 विगुणिचउठिठ वि ज्जसु ता अइ पंचमधु अकि ज्जसु चउठि पंचमादुदु मिलि



पिंगल०  
७

जसु॥ तिसरिपंती अंकादिजसु। पंचमपंति कोटु सउ अंका छट्टु मपंति परद  
णिसंकाः वित्तपभे अमते अरुवणादपंचम छट्टु लङ्ग गुरु सणद॥ ५०॥ सुच्छल  
छंदकला एवं करि पुच्छल वस मे टवि॥ अवसिदु गुरु जाणि अरु जो णि वउता व  
॥ ५१॥ छवी सत्त स आतद सत्तारद ससद ससाई वा आली संल कवं ते रद कोटी  
सम गगाइ॥ होइ गगदु मत्त चौ असत्त दगादाइ सत्ता वस ते हि विगाद पलटि कि  
ज्जि अइ उगाद सट्टि कलगादि णि अवासट्टि करु मत्त दत्त हे विपलटि असि  
हिणी वे अगाल होइ सट्टि सत्त रु अस्म सगुण रंध मत्त चौ सट्टि॥ ५२॥

राम०  
७



पुबद्धे उक्तदे सत्तगालमत्तवीसाइं॥ छठुमगणपत्रमज्जेगाफमे रुद्धुअलाइं। ज  
 हा॥ चंदोचंदणहारोतावअरुअं पआसंति। चंडेसरवरकितीजावणअप्यसअं  
 सेइ॥ ५३॥ पठमंवाररुमत्तवीरअठ्ठारहेहिंसंजुत्ता॥ जहपठमंतहतीअंदहपं  
 चविदुसिआगाह॥ ५४॥ जहा॥ जेणविणाणजिविज्जइअणुणिज्जइसोकआ  
 वरहोवि। पत्तेविणअरडाहेभेणकस्सणवत्तहोअगी॥ ५५॥ सत्तगणादीहंताजो  
 णलदुछठुणेदजोविसमे तदागाहेविअअद्वेछठुलदुअंविआणेदु॥ ५६॥  
 संवारागाहारसत्तावस्माइंहोतिमत्ताइं पुबधम्मिअतीसासत्ताइंसापरधम्मि



पिगल.

८

४

॥ ५७ ॥ सत्ताईसादरासत्ताजस्समितिस्मिरेहाइं सागाहाणंगाहाआआती  
सकखगलकी॥ ५८ ॥ तीसखराहिलस्मीसबेवंदंतिहोइविरावाआ हासइएकं  
एकंवंकंताकुणइणामाइ॥ ५९ ॥ लक्ष्मीकदीबदीलज्जाविज्जास्वमआदेही  
आ गोरीराईचुस्सछाआकतीमहामाई॥ ६० ॥ आकितीसिद्धीमाणीरामागा  
हिणीवीसावासीआ सोहाहरिणीचकीसारसिकुररीसिंहीहंसीआ॥ ६१ ॥ पठ  
मंचीहंसपअंवी सिंहुस्सविक्रमंजाआ तीरागअवरलुलिअं अहिलुलिअं च  
उस्यरागाहा॥ ६२ ॥ एकैजेकुलवंतीवेणाअकैहिहोइसंगहिणी णाअकहीणा

राम०

८



रं उवेशावदुणा अकाहो ॥ ६३ ॥ तेरहलदु आविप्यीर आईसेहिं खतिणी भणि  
 आसत्ताइ सेवेसी सेसा सुदिगीहो ॥ ६४ ॥ जापठमती अपंचमसत्तमठाणेण  
 होइ गुरुमज्जा गुविणिरगुणरहि आगाहादो संप आसेइ ॥ ६५ ॥ विगाहापठमद  
 लेसत्ताइ साइ मत्ताइ पछिमदलेणती साइ मज्जा पि अपि गलेणणारण ॥ ६६ ॥  
 जहा ॥ परिहर माणिणि मणपे कवहिकु सुमाइणी वस्ततु ज्ञकएखरहि अओइ  
 गुडि आधणं हि किलकामो ॥ ६७ ॥ पुबद्धे उत्तदे मत्तातिसत्ति सुह असंभणि आ  
 सोउगाहो वुत्तो पिंगलकइ दिवु सठ्ठिमत्तगो ॥ ६८ ॥ जहा ॥ सोउण जस्सणाम



पिंगल- अंस्सणअणाइंसुमुहिरुंधेइ भणवीरचेइवइणोपेक्वमिमुहंकहंजदिक्खंसे॥  
६८॥